टैबलेट मिलने से कार्यों में आयी पारदर्शिता

रूबी खातून
प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड के अनगड़ा कलस्टर के महेशपुर गांव में बरकत सखी मंडल और महेशपुर गांव में टैबलेट दीदी किस तरह स्वलेखा का काम कर रही हैं, इसकी जानकारी लेने पिछले महीने हरियाणा और वर्ल्ड बैंक की टीम महेशपुर गांव पहुंची. टीम ने टैबलेट दीदी से पहले और अब के अनुभवों के बारे में जानकारी ली. टैबलेट दीदियों ने उन्हें बताया कि समूह से जुड़ कर किस तरीके से उनकी जिंदगी बदल चुकी है. दीदियों ने बताया कि पहले गांव में लोग उनके पिता के नाम से जानते थे, लेकिन अब गांव में उनकी खुद की पहचान बन गयी है. पहले किसी अनजान से बात करने में डर लगता था, पर अब निडर होकर सबसे बात करती हैं. कई दीदियों ने कहा कि पहले लोग रजिस्टर दीदी के नाम से जानते थे, लेकिन अब टैबलेट दीदी के नाम से जानने लगे हैं. रजिस्टर के बदले अब टैबलेट के उपयोग पर टीम के सदस्यों ने दीदियों से कई सवाल भी पूछे. दीदियों ने कहा कि पहले सखी मंडल के लेन-देन को वित्त पंजिका में लिखने में काफी वक्त लगता था. अगर एक ही दिन में दो से तीन सखी मंडलों की बैठक हो जाती थी, तब हर शीट में सभी दीदियों के नाम, कुल उपस्थिति, कुल बचत से लेकर कैश बॉक्स में कुल प्राप्त जमा राशि और कुल भुगतान के बाद शेष जमा राशि लिखने में कभी-कभी गलतियां भी हो जाती थीं और शीट को पहुंचाने में काफी दिक्कत होती थी, लेकिन टैबलेट मिलने के बाद से यह काम काफी आसान हो गया है और पूरा काम करने में अब 5- 10मिनट का ही समय लगता है. एक दिन में अब पांच-छह सखी मंडलों के लेन-देन की इंट्री हो जाती है.अब टोटल करने की जरूरत नहीं पड़ती है. अंतिम शेष राशि खुद से अपडेट हो जाती है. हिसाब करने में भी कोई गलती नहीं होती है. किसी दीदी का लोन देखने के लिए पेज पलटने की अब आवश्यकता नहीं होती है, साथ ही सखी मंडल में बैठे-बैठे ही हम डाटा भी भेज सकते हैं. टैबलेट दीदी ने कहा कि टैबलेट मिलने से सखी मंडल के कार्यों में पारदर्शिता आयी है. टीम के सदस्यों ने समूह की अन्य दीदियों से भी अन्य कार्यों के बारे में जानकारी ली. वर्ल्ड बैंक के प्रतिनिधि ने कहा कि वर्ल्ड बैंक की सोच है कि समूह के मास्टर बुक कीपर को एक पीओएस मशीन दी जायेगी, जिससे ग्रामीणों को पैसा निकालने और जमा कराने के लिए बैंक नहीं जाना पड़े. इससे समय की बचत होगी. पीओएस मशीन के जरिये मास्टर बुक कीपर अब गांव में ही ग्रामीणों का खाता खोल सकती है. हरियाणा की टीम ने बरकत सखी मंडल की दीदियों और टैबलेट दीदी को बधाई देते हुए कहा कि आप सभी लोग ऐसे ही काम करके अपने गांव, प्रखंड और जिला का नाम रोशन करें.

सखी मंडल के कार्यों को देखने महेशपुर गांव पहुंची हरियाणा और वर्ल्ड बैंक की टीम.

समूह की मदद से बदले आर्थिक हालात

मुनिया देवी
प्रखंड : डुमरी
जिला : गिरिडीह

गिरिडीह जिले के डुमरी प्रखंड का एक गांव है जामताड़ा. इस गांव की शाहिना खातून समूह से जुड़ कर खुद को और अपने परिवार के अन्य सदस्यों को गरीबी से बाहर निकाल चुकी हैं. शाहिना अब अपनी जरूरतों के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाती हैं. उनके जीवन में यह बदलाव समूह से जुड़ने के बाद आया है. रानी आजीविका स्वयं सहायता समूह की सचिव शाहिना खातून कहती हैं कि समूह से जुड़ने से पहले उनकी आर्थिक स्थिति काफी खराब थी. एक बार उनके पति बीमार पड़ गये. पति के इलाज के लिए उन्हें अपने रिश्तेदारों और महाजन से पैसे उधार लेने पड़े. इलाज कराने के दौरान पता चला कि उनके पति की किडनी खराब हो चुकी है, जिसके कारण डॉक्टरों ने उनके पति को काम करने से साफ मना कर दिया था. पति की कमाई से ही घर चलता था. पति घर बैठ गये, तो घर में खाने के लाले पड़ने लगे. बच्चों की फीस नहीं भर पाने के कारण बच्चों की पढ़ायी छोड़ने की नौबत तक आ गयी. शाहिना का दुख यहीं खत्म नहीं हुआ.बारिश के कारण उनका पुराना घर भी ढह गया. घर ढहने के बाद शाहिना अपने पति के साथ सौतेली सास के मकान में रहने को बाध्य हो गयी थी.यहां भी परेशानी ने शाहिना का साथ नहीं छोड़ा. गाहे-बगाहे सौतेली सास शाहिना को घर से निकालने की धमकी देती रहती थी. यह ऐसा वक्त था जब शाहिना अपनी परेशानियों के कारण पूरी तरह से टूट चुकी थी. इस बीच शाहिना को महिला समूह की जानकारी मिली. उन्हें बताया गया कि समूह के माध्यम से अपनी आजीविका बढ़ाने के लिए ऋण मिलता है. समय से ऋण चुकता करने पर आरएफ और सीआरएफ का लाभ भी मिलेगा. समूह की हर गतिविधियों की जानकारी मिलने पर शाहिना महिला समूह से जुड़ गयीं. समूह की साप्ताहिक बैठकों में बचत पर जोर देने लगीं और धीरे-धीरे शाहिना एक सक्रिय महिला सदस्य बन गयीं. इसी बीच शाहिना ने सबसे पहले छोटे लोन लेकर अपने घर की आर्थिक कठिनाइयों को दूर किया. इसके बाद समूह से 20 हजार रुपये लेकर पति के लिए किराना दुकान खोलीं और बाकी बचे पैसों से घर का खर्च और महाजन से लिये कर्ज को चुकता किया. आज शाहिना अपने पति के साथ दुकान में व्यस्त रहती हैं. दुकान से होनेवाली आमदनी से शाहिना अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही हैं. शाहिना आज समूह से जुड़ कर आत्मनिर्भर हो चुकी हैं. अब उनके चेहरे पर खुशी साफ झलकती है. समूह की सक्रिय सदस्य शाहिना अब अन्य दीदियों को समूह से जोड़ कर आगे बढ़ने और गरीबी दूर करने के लिए प्रेरित भी कर रही हैं.

अपनी किराना दुकान में बैठी समूह की सदस्य शाहिना खातून.

समूह से जुड़ कर नीलिमा की बदली जिंदगी

इमनती भेंगरा
प्रखंड : मनोहरपुर
जिला : प. सिंहभूम

महिला समूह से जुड़ कर अब महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही हैं. वह परिवार चलाने में काफी सहयोग कर रही हैं. पश्चिमी सिंहभूम जिले के मनोहरपुर प्रखंड में एक गांव है रेड़ा. इस गांव में इन दिनों महिला समूह की दीदी नीलिमा भेंगरा की खूब चर्चा हो रही है. नीलिमा रेड़ा गांव में अपने परिवार के साथ खुशहाली से अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं. हालांकि पहले ऐसे हालात नहीं थे. एक वक्त था, जब नीलिमा काफी आर्थिक तंगी से जूझ रही थीं. घर में खाने के लाले पड़े थे. बचपन में ही नीलिमा भेंगरा के माता-पिता का देहांत हो गया था. जिसके चलते वो बचपन से ही परेशानियों का सामना करती रहीं. बड़े परिवार में नीलिमा की शादी हुई. पति सड़क बनाने का काम करते थे, पर पति को उतना पैसा नहीं मिलता था कि सपरिवार दो-जून की रोटी सही तरीके से खा सकें. घर की खराब हालत को देख कर नीलिमा भी काफी तनाव में रहती थी. इसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा था. फिर एक दिन नीलिमा भेंगरा को गांव में समूह के बारे में जानकारी मिली और वह समूह से जुड़ कर सक्रिय सदस्य बन गयीं. नीलिमा ने बकरी पालन करने का मन बनाया और समूह से पांच हजार रुपये लोन लेकर बकरी पालन की शुरुआत की. इसी बीच उन्होंने ग्राम संगठन के जरिये 10हजार रुपये का लोन लेकर एक किराने की दुकान खोल ली. बकरी पालन और किराने की दुकान से नीलिमा को अच्छी आमदनी होने लगी.धीरे-धीरे नीलिमा की आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा. नीलिमा के बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ने लगे. नीलिमा कहती हैं कि आजीविका ने उन्हें जीवन जीने का रास्ता दिखाया और उनकी जिंदगी बदल गयी. आज नीलिमा गांव की अन्य महिलाओं को समूह और उससे होनेवाले लाभ के बारे में बता रही हैं. नीलिमा कहती हैं कि समूह से जुड़ कर वह आज आत्मनिर्भर बनी हैं और इसी का परिणाम है कि उनका परिवार गरीबी से बाहर निकलकर आज खुशहाल है.

किराना दुकान से आत्मनिर्भर बनीं सखी मंडल की सदस्य नीलिमा भेंगरा.

अब खुले में शौच नहीं

झूमा झा
गांव : गोविंदपुर
जिला : पाकुड़

- शौचालय निर्माण के लिए गोविंदपुर गांव में छह लाख रुपये राशि मुहैया
- अब घर की बहू-बेटियों को शौच के लिए घर से बाहर नहीं जाना पड़ेगा

स्वच्छ भारत अभियान के तहत खुले में शौच से मुक्त करने के लिए पूरे देश में अभियान चलाया जा रहा है. शौचालय निर्माण को लेकर गरीब परिवारों को प्रोत्साहन राशि भी उपलब्ध करायी जा रही है. पाकुड़ जिले के पाकुड़ प्रखंड के हीरानंदनपुर पंचायत का एक गांव है गोविंदपुर. इस गांव में शौचालय निर्माण का कार्य किया जा रहा है. मनरेगा के तहत गांव के आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई महिलाओं को शौचालय निर्माण के लिए राशि मुहैया करायी जा रही है. अब गांव की महिलाओं को खुले में शौच के लिए नहीं जाना पड़ेगा. शौचालय निर्माण के लिए गोविंदपुर गांव में छह लाख रुपये की राशि मुहैया करायी गयी है. इससे गरीब महिलाओं के चेहरे पर मुस्कान लौट आयी है. ग्रामीण महिलाओं का कहना है कि अब हमारा गांव और समाज अधिक सुंदर दिखेगा, साथ ही पर्यावरण भी अब दूषित होने से बचेगा. मनरेगा के तहत मिले शौचालय के संबंध में गांव की एक दीदी कहती हैं कि अब उनके घर की बहू-बेटियों को शौच के लिए घर से बाहर नहीं जाना पड़ेगा. कई बार खुले में शौच करने को लेकर लड़ाई-झगड़े की नौबत तक आ जाती है, पर अब घर-घर शौचालय की व्यवस्था होने से गांव खुले में शौच से मुक्त हो जायेगा. महिलाओं को अब इस बात की खुशी है कि अब गंदगी के कारण गांव के लोग बीमार नहीं पड़ेंगे और गांव स्वच्छ रहेगा.

स्वच्छ भारत अभियान के तहत शौचालय निर्माण में लगीं ग्रामीण महिला.

शीला के जीवन में आया बदलाव

पिंकी महतो
प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड के हेसल गांव की रहनेवाली हैं शीला देवी. समूह का सहयोग और अपनी मजबूत इच्छाशक्ति की बदौलत शीला अपने गांव में एक जाना-पहचाना नाम बन गयी हैं. समूह से जुड़ने से पहले शीला अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए अपने ससुर पर आश्रित थीं. कारण था शीला के पति द्वारा कोई काम नहीं करना. इस दौरान शीला को काफी कठिनाइयों से भी गुजरना पड़ा. हालांकि जब एनआरएलएम के सदस्यों के कदम हेसल गांव में पड़े और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के गुर सीखाये, तो शीला भी इसका एक अभिन्न अंग बन गयीं. शीला देवी के सामने पहले से ही आर्थिक तंगी की स्थिति थी, लेकिन एनआरएलएम के सदस्यों द्वारा गरीबी से बाहर निकलने के रास्ते बताने पर शीला का भी हौसला बढ़ा और समूह से जुड़ गयीं. समूह की विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रहनेवाली शीला वर्तमान में 12 समूहों की मास्टर बुक कीपर के तौर पर काम कर रही हैं. शीला बैंक लिंकेज के तहत ग्रामीणों का बैंक में एकाउंट खुलवाने में सहयोग करने लगीं. इस दौरान शीला ने समूह से 80हजार रुपये का लोन लिया. इस रुपये से उन्होंने कॉपी बनानेवाली मशीन खरीदी और पति को इस काम में लगाया. शीला के पति को भी एक रोजगार मिला और उन्होंने भी मेहनत करनी शुरू की. पति-पत्नी दोनों मिल कर काम करने लगे. कॉपियां छपने लगीं. और उसे आसपास के स्कूलों तथा दुकानों में बिक्री करने लगीं. मेहनत का परिणाम भी सामने आने लगा और उनकी आमदनी अच्छी होने लगी. अच्छी आमदनी होने के कारण शीला परिवार की जरूरतों के अलावा समूह से लिये ऋण को भी धीरे-धीरे चुकता करने लगीं. अब तो मात्र 30हजार रुपये चुकता करने को बचे हैं. शीला कहती हैं कि समूह ने पहले मुझे और फिर मेरे पति को रोजगार दिलाया. इसी का परिणाम है कि आज मेरे बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ने जाते हैं. बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ने जाते देख काफी संतुष्टि मिलती है. शीला अपने व्यवसाय को और आगे बढ़ाना चाहती हैं.

कॉपी छापायी मशीन के साथ सखी मंडल की दीदी शीला देवी.

खुशहाली की ओर मोरडीहा गांव

पूनमवाला
प्रखंड : ठाकुरगंगटी
जिला : गोड्डा

- शैचालय निर्माण में ग्राम संगठन की सभी दीदियों का भरपूर सहयोग
- शौचालय निर्माण के लिए ग्राम संगठन के खाते में एक लाख20 हजार रुपये जमा

गोड्डा जिले के ठाकुरगंगटी प्रखंड के मोरडीहा, बेलाटीकर और बिहारी गांव जल्द ही खुले में शौच से मुक्त होनेवाले हैं. इसी के मद्देनजर मोरडीहा पंचायत में सखी मंडल की दीदियों की उपस्थिति में ग्रामसभा का आयोजन किया गया. इसका नेतृत्व गंगटी प्रखंड के बीपीएम वासुदेव प्रसाद साह ने किया. इस अवसर पर ग्रामीणों की काफी उपस्थिति रही. ग्रामसभा में उपस्थित सखी मंडल की दीदियों ने आगामी छह माह में मोरडीहा पंचायत के हर घर में शौचालय का निर्माण कार्य पूरा कराने का संकल्प लिया. वहीं पीआरपी रूखसाना ने कहा कि शौचालय निर्माण को लेकर ग्राम संगठन के सभी सदस्यों का भरपूर सहयोग मिलेगा. लक्ष्य आधारित इस कार्य को पूरा करने में दीदियां अहम भूमिका निभा रही हैं. शौचालय निर्माण के लिए ग्राम संगठन के खाते में एक लाख20 हजार रुपये जमा है, जिससे 10लाभुकों के घरों में शौचालय का निर्माण किया जा रहा है. इस दौरान प्रखंड पदाधिकारियों ने शौचालय निर्माण और उससे होनेवाले लाभ के बारे में ग्रामीणों को बताया. पदाधिकारियों ने कहा कि ग्राम संगठन के माध्यम से प्रत्येक पंचायत में शौचालय निर्माण के कार्य का उद्देश्य खुद और दूसरों को स्वस्थ रखना है. मोरडीहा, बेलाटीकर और बिहारी गांव के 10-10 लाभुकों के घरों में शौचालय का निर्माण हुआ है. गांवों में हो रहे शौचालय निर्माण के प्रति ग्रामीणों में भी गजब का उत्साह देखने को मिल रहा है. समूह की महिलाओं की सार्थक पहल का असर गांवों में दिखने लगा है.

स्वच्छ भारत मिशन के तहत महिला लाभुक के घर में बना शौचालय.

सब्जियों ने बदली जिंदगी

प्रीति लिंडा
प्रखंड : कांके
जिला : रांची

रांची जिले के कांके प्रखंड के दुबलिया गांव की सरस्वती कुजूर के जीवन में समूह से काफी बदलाव आया. कल तक खाने को मोहताज सरस्वती आज सब्जियां बेच कर अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही हैं. साल 2012में पति की मृत्यु के बाद सरस्वती के सामने दुखों का पहाड़ आ गया था.दो बच्चों के लालन-पालन में काफी दिक्कत हो रही थी. बावजूद इसके हिम्मत नहीं हारनेवाली सरस्वती घर चलाने के लिए सब्जियां बेचने लगीं, लेकिन पूंजी की कमी के कारण आर्थिक परेशानियों से सरस्वती को निजात नहीं मिल रहा था. इसी बीच दुबलिया गांव में जेएसएलपीएस के माध्यम से वर्ष 2016में स्वयं सहायता समूह का गठन हुआ. सरस्वती कुजूर भी सीमा स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयीं. समूह में सरस्वती को कोषाध्यक्ष पद पर चयन किया गया.धीरे-धीरे समूह की हर गतिविधियों में सक्रिय रहने लगीं. घर और व्यवसाय शुरू करने के लिए सरस्वती ने समूह से 20हजार रुपये से अधिक का ऋण लिया. अब सरस्वती व्यापारियों से थोक में सब्जी लेकर उसे बाजारों में खुदरे के भाव में बेचने लगीं. इससे उन्हें मुनाफा भी होने लगा. सरस्वती के अथक प्रयास को देखते हुए ग्रामीणों ने गर्भवती महिलाओं की देखरेख के लिए सहिया की जिम्मेवारी भी सौंपी. अब सरस्वती गर्भवती महिलाओं का समय से टीकाकरण करवाती हैं, साथ ही गर्भवती महिलाओं का प्रसव अस्पतालों में हो, इस काम को भी बखूबी निभा रही हैं. इसके लिए सरस्वती को मानदेय भी मिलता है. सरस्वती देवी कहती हैं कि समूह ने उसे जीवन का एक नया आयाम दिया है. भले ही हम मेहनत कर रहे हैं, लेकिन रास्ता दिखाने का काम समूह ने ही किया है. इससे हौसला भी बढ़ा है और दूसरों को प्रोत्साहित करने का मौका भी मिला है.

बाजार में सब्जी बेचतीं सखी मंडल की सदस्य सरस्वती कुजूर.